ya.com

लोकसत्य

गाँधी का लेखकीय व वक्ता रूप सहज रहा: रामचंद्र गुहा

नई दिल्ली, लोकसत्य

साहित्य अकादेमी के स्थापना दिवस के अवसर पर 'महात्मा गाँधी: एक लेखक और वक्ता के रूप में'विषयक व्याख्यान देते हुए रामचंद्र गुहा ने कहा कि गाँधी रवींद्रनाथ टैगोर की तरह सृजनात्मक लेखक तो नहीं थे, लेकिन उनका लेखन विभिन्न भाषाओं में, जिनमें गुजराती, अंग्रेजी और हिंदी थी, में अलग-अलग तरीकों से व्यक्त होता था। गुजराती में जहाँ वे भारतीय जनता से संवाद करते दीखते हैं वहीं अंग्रेजी में उनका लेखन ब्रिटिश सरकार से राजनीतिक संवाद करता हुआ नजर आता है। उन्होंने उनके लेखन के तीन उदाहरण पेश किए, जिनमें से पहला प्राकृतिक आपदा से संबंधित था जो सन् 1934 के बिहार-भूकंप के वर्णन का था। दूसरा मानवनिर्मित आपदा के बारे में था जो 1921 में आहयोग

गुहा ने दिया साहित्य अकादेमी स्थापना दिवस व्याख्यान

आंदोलन के दौरान प्रिंस वेल्स के बम्बई आगमन के विरोध को लेकर था। तीसरा और अंतिम उदाहरण 1940 में सर एंड्रूज की श्रद्धांजलि से जुड़ा हुआ था। इन उदाहरणों के सहारे उन्होंने कहा कि इन तीनों में उनकी भाषा घटनाओं के अनुसार परिवर्तित हुई है।

लुई फिशर की पुस्तक के एक उदाहरण से उन्होंने बताया कि गाँधी एक वक्ता के रूप में आक्रामक नहीं थे बल्कि बोलते समय बहुत ही सहज ढंग से अपनी बात रखते थे। उन्होंने गाँधी के हिंद स्वराज के एक उदाहरण के आधार पर बताया कि गाँधी का पूरा लेखन चार मुख्य विचारों - सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक उन्नति, सांस्कृतिक एकता और अहिंसा पर केंद्रित है।